रीडिंग डेवलेपमेंट सैल

मथुरा परियोजनाः मॉनीटरिंग कार्यक्रम

पहला चरण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

उद्देश्य

- परियोजना के विकास को समीक्षात्मक दृष्टि से देखना एवं उसे एक सुचिंतित और सुनियोजित दिशा देना।
- कार्यक्रम की समझ का कक्षा में क्रियान्वयन सुनिश्चित करना।
- क्रियान्वयन के दौरान आई समस्याओं को समझना और फीडबैक देना।
- मॉनीटरिंग की रिपोर्ट के आधार पर परियोजना के आगे के स्वरूप को तय करना।

मॉनीटरिंग प्रक्रिया

- विद्यालयों में मॉनीटरिंग का कार्य रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से जारी निर्देशानुसार दिसंबर, 09 से आरंभ होगा।
- मॉनीटरिंग दो स्तर पर की जाएगी –
  पहले स्तर पर शिक्षक, एन.पी.आर.सी. और बी.आर.सी. द्वारा तथा दूसरे स्तर पर मास्टर ट्रेनर, आर.डी.सी. के सदस्य, जिले एवं राज्य स्तर के अधिकारियों एवं आर.डी.सी. द्वारा नामांकित सदस्यों द्वारा।
- मॉनीटरिंग से पूर्व कार्यरत दोनों स्तर के सदस्यों को अभिप्रेरित किया जाएगा कि वे स्वयं इस कार्यक्रम की प्रक्रिया को अपना सकें।
- पहले स्तर की मॉनीटरिंग के आधार पर विश्लेषण पत्रक (Analysis sheet) के रूप में एक प्रारंभिक रिपोर्ट भी तैयार की जाएगी जिसे दूसरे स्तर के सदस्यों के अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। इस आरंभिक प्रतिवेदन में सभी विद्यालयों में कार्य की स्थिति पर संक्षिप्त टीप उपलब्ध रहेगी। आवश्यकतानुसार दूसरे स्तर के सदस्यों की सहायता से विद्यालयों में पढ़ने की स्थिति में सुधार लाया जाएगा।
- मॉनीटरिंग के दौरान प्रमुख रूप से विद्यालयों की वर्तमान कार्यदशाओं और पठन सामग्री की उपयोगिता, शिक्षकों के कार्यव्यवहार एवं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया और परिणाम पर विशेष ध्यान जाएगा।
- मॉनीटरिंग का कार्य नवंबर 2009 से मार्च 2010 तक की अवधि में पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।
- माह जनवरी एवं फरवरी 2010 में दूसरे स्तर पर चयनित विद्यालयों का अवलोकन किया जाएगा।
- विश्लेषण के आधार पर ऐसे विद्यालयों में वीडियो रिकॉर्डिंग की जाएगी जहाँ कार्य पर्याप्त संतोषजनक है।

मॉनीटरिंग कार्यदल के अभिविन्यास (Orientation) के लिए विचारणीय बिंदु

- पढ़ने की समझ के आधार पर बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल।
- पढ़ने के सतत आकलन की प्रक्रिया कक्षा में चल रही है इस ओर विशेष ध्यान।
- पढ़ने के कोने का उपयोग बच्चों द्वारा स्वतंत्र स्व-पठन एवं लिखित अभिव्यक्ति के रूप में।
- बच्चों को लिखित अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक मौके और लिखित सामग्री का कक्षा में पठन सामग्री की तरह उपयोग।
- पढ़ने की समझ के लिए विकसित की गई सामग्री का गंभीरतापूर्वक अध्ययन और उस पर नियमित चर्चा।